नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

**महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा**

**Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya**

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

*(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)*

---

# हिंदी विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी उदघाटित

## संवादकर्ता की भूमिका में हों अध्यापक – प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल

वर्धा, दि. 20 फरवरी 2020 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के अंतर्गत शिक्षा

विद्यापीठ में 20 एवं 21 फरवरी 2020 को 'अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृत्तियाँ, नवाचार तथा बदलता परिदृष्य' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यक्रम के उदघाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रतिकुलपति प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल ने कहा कि शिक्षकों को संवादकर्ता की भूमिका में रहकर कक्षाओं को संचालित करना चाहिए। शिक्षकों को साधनों में संतुलन बनाकर अवधारणाओं को परिवर्तित करने का कार्य करना चाहिए ताकि विद्यार्थी आत्मनिर्भरता की दिशा में तैयार हो सकें।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उदघाटन 20 फरवरी को सुबह 10.30 बजे डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विद्या भवन स्थित कस्तूरबा सभागार में किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में एनसीईआरटी की पूर्व प्रोफेसर नीरजा शुक्ला, शिक्षा एवं प्रबंधन विद्यापीठ के अधिष्ठाता

प्रो. मनोज कुमार, शिक्षा विभाग के अध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, डॉ. शिरीष पाल सिंह, डॉ. धर्मेंद्र शंभरकर, डॉ. आर. पुष्पा नामदेव उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि प्रो. नीरजा शुक्ला ने शिक्षा नीति और शिक्षा पद्धति में बदलाव की बात करते हुए कहा कि बदलते परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों को अध्यापन में नई सोच

विकसित करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को अपना पसंदीदा विषय अधिक गंभीरता के साथ पढ़ाना चाहिए। शिक्षा तथा प्रबंधन विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार ने कहा कि बदलते समाज के साथ अध्यापक को खुद तैयारी के साथ ढ़ालना होगा। उन्होंने शिक्षा में भाषा का सवाल, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में चुनौतियां आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की। संगोष्ठी की प्रस्तावना शिक्षा विभाग के सह अध्यापक डॉ. शिरीष पाल सिंह ने रखी। उन्होंने दो दिनों तक होने वाली चर्चाओं का ब्यौरा प्रस्तुत किया। स्वागत वक्तव्य में शिक्षा विभाग के अध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने आशा व्यक्त की कि सोचने की प्रक्रिया को जागृत करने का काम संगोष्ठी के माध्यम से होगा। कार्यक्रम का संचालन सहायक प्रोफेसर डॉ. तक्षा शंभरकर ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन संगोष्ठी समन्वयक डॉ. आर. पुष्पा नामदेव ने प्रस्तुत किया। संगोष्ठी में विभिन्न विश्वविद्यायों से पधारे प्रतिभागी तथा हिंदी विश्वविद्यालय के शोधार्थी सहभागी हुए हैं। उदघाटन कार्यक्रम में अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।